|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 03. August 2025 | | |
| **18. Sonntag im Jahreskreis C** | | |
| Erste Lesung: Koh 1,2; 2,21-23; Zweite Lesung: Kol 3,1-5.9-11; Evangelium: Lk 12,13-21 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1+4! | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 128 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 90, 3-6.12-14 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 50, 1 | Unsere Tage zu zählen |
|  | oder |  |
|  | Psalmenlied: |  |
|  | GL 434, 1-4 | Noch ehe die Sonne am Himmel stand |
|  | oder |  |
|  | GL 275, 1+3+4 | O Herr, nimm unsre Schuld |
|  |  | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Selig, die arm sind vor Gott;* | |
|  | *denn ihnen gehört das Himmelreich.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 792, 1 | Ich glaube, Herr, mit Zuversicht |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 440 | Hilf, Herr, meines Lebens |
|  | 257, 2-4 | Der alles, was der Mensch beginnt |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 129 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 139 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 361, 1-3 | Mein schönste Zier |
|  | GL 465, 3+4 | Das Jahr lehrt |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 382, 1+5! | Ein Danklied sei dem Herrn |
|  | GL 395, (2!) | Den Herren will ich loben |